06/5/20

Dr. R.N. Sharma
J.M.S. College Munger

B.A. Part-II Philosophy (H) paper-IV

स्पिनोजा के अनुसार द्रव्य सिद्धान्त (Theory of Substance according to Spinoza)

स्पिनोजा ने अपने द्रव्य दर्शन में द्रव्य का विशद विवेचन किया है। उनके अनुसार द्रव्य (Substance), ईश्वर और प्रकृति एक ही सत्ता के तीन विभिन्न नाम हैं। स्पिनोजा ने द्रव्य की यह परिभाषा दी है– "द्रव्य से मेरा तात्पर्य उस वस्तु से है जो स्वतंत्र रूप में स्थित हो और जो आत्मस्थित हो अर्थात् जिसके चिन्तन के लिए किसी अन्य वस्तु के चिन्तन की अपेक्षा न हो।" (By Substance I understand that which is in itself and is conceived by means of itself is that conception of which can be form without the aid of the conception of any other thing." अस्तित्व (Existence) स्वातंत्र्य द्रव्य का मुख्य लक्षण है जो अपने अस्तित्व और ज्ञान के लिए पूर्णतया स्वतंत्र हो, वही द्रव्य है। द्रव्य की सहायता के बिना किसी वस्तु का अस्तित्व या ज्ञान नहीं हो सकता, क्योंकि सभी पदार्थ अपने अस्तित्व और ज्ञान के लिए द्रव्य अथवा ईश्वर पर आश्रित हैं। इसके विपरीत द्रव्य किसी अन्य सत्ता पर आश्रित नहीं है। इस प्रकार द्रव्य वह है जो स्वयं किसी अन्य सत्ता पर निर्भर नहीं, किन्तु अन्य सभी वस्तुएँ उस पर निर्भर हों। द्रव्य अर्थात् ईश्वर की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(i) द्रव्य (ईश्वर) स्वतंत्र है। स्पिनोजा ने द्रव्य को स्वतंत्र अस्तित्व के माध्यम से व्यक्त किया है। ईश्वर अपने नियमों द्वारा आबद्ध है बाह्य नियमों द्वारा वह कदापि संचालित नहीं होता।

(ii) ईश्वर पूर्ण है। उसकी कोई भी इच्छा अतृप्त नहीं है। जो अपूर्ण है, वह स्वतंत्र नहीं हो सकता। ईश्वर सर्वांगपूर्ण (all perfect) है। उसकी कोई भी इच्छा, लीला का अपना कोई प्रयोजन नहीं है, स्पिनोजा प्रयोजनवाद के विपरीत नियतिवाद का समर्थन करते हैं।

(iii) द्रव्य निरपेक्ष (Absolute) है। अपनी सत्ता या ज्ञान के लिए उसे किसी अन्य सत्ता की अपेक्षा नहीं रहती।

(iv) द्रव्य अद्वितीय (Non-dual) है। यदि द्रव्य के अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु की सत्ता हो तो द्रव्य स्वतंत्र और निरपेक्ष नहीं रह जाता है। दो वस्तुओं के होने का अर्थ है कि उनमें कोई न कोई संबंध अवश्य होगा और संबंध होते ही वे परस्पर सापेक्ष और परतंत्र हो जाएँगे।

(v) द्रव्य अनिश्चित, या अपरिमित (infinite) है। उसे निश्चित या सीमित नहीं किया जा सकता है। सीमित होने का अर्थ है किसी पर आश्रित होना, किन्तु द्रव्य किसी पर आश्रित नहीं है। यह अनन्त है।

(vi) द्रव्य स्वतः सिद्ध (Self proof) है और स्वयंज्योति
स्वरूप है क्योंकि उसे अपने ज्ञान के लिए किसी अन्य सत्ता पर निर्भर नहीं
होना पड़ता।

(vii) द्रव्य स्वयंभू (Self causal) है। वह अपना कारण स्वयं
है। वह सभी का कारण होते हुए भी स्वयं अकारण है।

(viii) द्रव्य नित्य (Eternal) है। स्वयं उत्पन्न होने के कारण
इसका विनाश नहीं हो सकता।

(ix) द्रव्य विश्वव्यापी (immanent) है। स्पिनोजा का
द्रव्य विश्व के प्रत्येक अणु में व्याप्त है, परन्तु वह जगत के परे नहीं है।
चैतन्य और विस्तार के समानान्तर गुण होने के कारण ईश्वर और
जगत में तादात्म्य संबंध पाया जाता है।

~~(X) द्रव्य से द्रव्य उत्पन्न नहीं होता। द्रव्य से केवल~~

(X) द्रव्य या ईश्वर चेतन और अचेतन दोनों है। यह चैतन्य
गुण की दृष्टि से चेतन है परन्तु विस्तार गुण की दृष्टि से अचेतन है।

(XI) द्रव्य निर्गुण और अनिर्वचनीय है। द्रव्य को निर्गुण
कहने का अर्थ यह नहीं होता कि उसमें कोई गुण नहीं पाये जाते। द्रव्य के
भीतर अनन्त गुण पाये जाते हैं। अतः निर्गुण का वास्तविक अर्थ
गुणों का अभाव नहीं; बल्कि सीमित गुणों का अभाव है। ईश्वर
के अन्दर ससीम गुणों का अभाव होने के कारण ही उसे निर्गुण कहा
जाता है। द्रव्य अनिर्वचनीय भी है। स्पिनोजा के अनुसार 'प्रत्येक गुण
निषेधात्मक होता है'। जब हम किसी वस्तु के ऊपर एक गुण का
आरोपण करते हैं तो उसे अनेक ~~गुणों~~ सम्भावनाओं (?) से वंचित भी कर देते हैं। इस
दृष्टि से असीमित अथवा अनिश्चित द्रव्य को निर्गुण होना आवश्यक
है। वर्णन सदा सीमित गुणों का ही होता है। यदि संख्या और परिमाण
की दृष्टि से गुण असीम है तो वाणी द्वारा उसका वर्णन असंभव है।
ईश्वर को निर्गुण और अनिर्वचनीय कहने का एक अर्थ यह भी है कि
उसे किसी प्रकार का साकार रूप नहीं दिया जा सकता है। यदि उसे मानव
रूप में सोचते हैं तो उसमें मानवेतर आकार का निषेध करते हैं।
ईश्वर निराकार है। समस्त सृष्टि ही उसका आकार है। वह सृष्टिकर्ता
भी नहीं है। वह तो स्वयं सृष्टि है।

(Xii) ईश्वर बुद्धिगम्य होते हुए भी पूर्णरूप में ज्ञात नहीं है।
ईश्वर की पूर्ण अवधारणा नहीं की जा सकती है क्योंकि उसमें अनन्त
गुण विद्यमान हैं। बुद्धि द्वारा उसकी न तो कल्पना की जा सकती है और न
उसका प्रतिबिम्ब संभव है। स्पिनोजा का कहना है कि अनन्त गुणों

Scanned with CamScanner

में से केवल कुछ ही गुणों को जाना जा सकता है, न कि सभी गुणों को।

(xiii) ईश्वर जगत का निमित्त कारण (Efficient cause) एवं उपादान कारण (Material cause) दोनों है। वह सृष्टिकर्ता के साथ-साथ स्वयं सृष्टि भी है। यहूदी, इस्लाम, ईसाई धर्म का ईश्वर केवल विश्व का रचयिता है। वह सुयोजन व्यापार करता है, सज्जनों को पुरस्कृत करता है, दुष्टों को सजा देता है और अपने भक्तों को अपने निकट स्वर्ग में स्थान देता है। स्पिनोजा के अनुसार इन धर्मों का ईश्वर परिच्छिन्न हो जाता है। अतः तार्किक दृष्टि से ये सभी धर्म निरीश्वरवादी हैं क्योंकि ये वास्तव में ईश्वर का निषेध कर देते हैं।

(xiv) स्पिनोजा के दर्शन को सर्वेश्वरवाद कहा जाता है क्योंकि उनके अनुसार ईश्वर और सृष्टि में तादात्म्य सम्बन्ध है।

कुछ आलोचक स्पिनोजा के दर्शन को निरीश्वरवादी या भौतिकवादी बतलाते हैं। यह आक्षेप निराधार है। स्पिनोजा ने ईश्वर की विशेष अर्थ में व्याख्या किया है। यह ईश्वर विश्व के कण-कण में व्याप्त है। ऐसी स्थिति में उसे निरीश्वरवादी कैसे कहा जा सकता है? हेनरी पोलक का विचार है कि – जब स्पिनोजा कहते हैं कि प्रकृति या सृष्टि ईश्वर है तब वे ईश्वर को नीचे नहीं गिराते बल्कि प्रकृति या सृष्टि को ही ईश्वर तक उठाने का कोशिश करते हैं; सृष्टि या प्रकृति भौतिक नहीं बल्कि दिव्य रूप है। उसमें अनन्तता, एकरूपता, समरसता तथा सर्जनात्मकता आदि सब कुछ विद्यमान है। अतः स्पिनोजा को भौतिकवादी अथवा निरीश्वरवादी कहना अनुचित है।

पुनः एक प्रश्न उठता है कि जब स्पिनोजा ईश्वर, द्रव्य और प्रकृति को एकार्थक मानते हैं तो वे द्रव्य या प्रकृति से ही काम चला लेते। वे ईश्वर का प्रयोग क्यों करते हैं? इसका उत्तर यह है कि स्पिनोजा मात्र जिज्ञासु या तत्वज्ञानी नहीं हैं। उनका परम लक्ष्य-परम मूल्य, सुख या मोक्ष का अनुसंधान है। वह मात्र सत्ता नहीं है बल्कि पूर्ण परमानन्द भी है। स्पिनोजा इसे ही ईश्वर मानते हैं। ईश्वर के माध्यम से उन्होंने परमसुख को प्राप्त करने का प्रयत्न किया है।

स्पिनोजा ईश्वर के तीन रूप को मानते हैं—

1. विश्वरूप – Natura Naturata
2. विश्वात्म रूप – Natura Naturans
3. पर-रूप – Ens Absolutum Indeterminatum

(i) विश्व रूप– जब ईश्वर को विकारों या पर्यायों (Modes) की दृष्टि से देखते हैं तो वह विश्व रूप में दीख पड़ता है। विभिन्न भौतिक वस्तुओं एवं आत्माओं के समुच्चय (Grand total) को विश्व कहा गया है। यह इन्द्रिय प्रत्यक्ष या भेद का स्तर है। यह ईश्वर का निम्न रूप है।

(ii) विश्वात्म-रूप– जब ईश्वर को गुणों की दृष्टि से देखते हैं तो वह विश्वात्म-रूप में दीख पड़ता है। यहाँ भौतिक पर्यायों के अन्तर्गत विस्तार गुण और चेतन पर्यायों के अन्तर्गत चैतन्य गुण निहित दीख पड़ते हैं। यह भेद का नहीं, बल्कि अन्तर्मुखी अभेद का स्तर है। यह इन्द्रिय प्रत्यक्ष का नहीं, बल्कि बुद्धि का स्तर है।

(iii) पर-रूप– जब ईश्वर को विशुद्ध द्रव्य की दृष्टि से देखते हैं तो यह पर-रूप में दीख पड़ता है। शरीर और आत्मा के सगुण रूप में प्रतीत होने वाला निर्गुण और अनिर्वचनीय तत्व ईश्वर का पर-रूप है। ईश्वर में सीमित गुणों का अभाव होने के कारण यह निर्गुण है। इसका वर्णन संभव नहीं है क्योंकि वर्णन सदैव सीमित गुणों का होता है। इसीलिए यह अनिर्वचनीय है। यह न तो इन्द्रिय प्रत्यक्ष का स्तर है और न बुद्धि का स्तर है। यह विशुद्ध निर्विकल्प अनुभूति का स्तर है। यह पूर्णतः अभेद का स्तर है। पर-ब्रह्म ईश्वर का सर्वोत्तम रूप है, जिसे निर्विकल्प अनुभूति द्वारा जाना जा सकता है।

यहाँ प्रश्न उठता है कि निर्विकल्प अनुभूति क्या है? यह सहजज्ञान या अन्तःप्रज्ञा है। यह रहस्यमय अनुभूति है। यह उस वैज्ञानिक अनुभूति से भिन्न है जो सर्वसुलभ हो और जिसे सिद्धान्त रूप में सभी दुहरा सकें। इसीलिए स्पिनोजा की अन्तःप्रज्ञा अत्यन्त व्यक्तिगत तथा आत्मगत (Subjective) ज्ञान है। इसे तर्कनिष्ठ अनुभववादी ज्ञान के रूप में नहीं मानते हैं।

डॉ० राम नारायण शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर
दर्शनशास्त्र विभाग
जे० एम० एस० कॉलेज, मुंगेर
मुंगेर विश्वविद्यालय मुंगेर

दिनांक 05/5/20